डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. Part – II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper – IV

Date : 08-02-202[illegible]

Ajanta
Page No. ______
Date ______

'अजातशत्रु' का अभिनेयता

नाटक केवल मनोरंजनार्थक ही नहीं लिखा जाता है बल्कि दर्शक-वर्ग भी उससे जुड़ा होता है। सर्वप्रथम तो 'अजातशत्रु' के विस्तार की समस्या है। यह नाटक तीन अंकों में विभाजित किया गया है और प्रत्येक अंक में क्रमशः 9, 10, 9 दृश्य समाहित है जो दृश्य बदलने में बाधा उत्पन्न करते हैं लेकिन आधुनिक रंगमंचों पर इतने दृश्यों पर भी सरलता से मंचित किया जा सकता है। दूसरे, इस नाटक में गीतों का बाहुल्य है। तीसरे, भाषा शैली की क्लिष्टता भी अभिनेय में बाधक होती है। आलोच्य नाटक की भाषा शैली सरल नहीं है लेकिन इतनी भी कठिन नहीं है कि उसे समझा न जा सके। चौथे, नाटक में रंगमंचीय संकेतों का अभाव खलता है। फिर भी प्रसाद जी से जहाँ तक बन पड़ा है वहाँ रंगमंचीय संकेत दिये हैं, यथा –

प्रसेनजीत : किंतु वह राष्ट्र का द्रोही है, क्यों धर्माधिकारी, उसका क्या दंड है?

धर्माधिकारी : (सिर नीचा करके) महाराज!

× × ×

अजातशत्रु : जैसी माता की आज्ञा। (छलना तिलक और आरती करती है)
(नेपथ्य में रणवाद्य, विरुद्धक और अजात की युद्ध-यात्रा)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नाटक में अभिनेयता की दृष्टि से भले ही कुछ दोष दिखाई दें लेकिन फिर भी इसे आधुनिक रंगमंच पर बड़े ही सुंदर ढ़ंग से मंचित किया जा सकता है।